

bat das partic. कष्ट die Bed. eines fut. (etwa *Leiden ankündigend*). — 2) n. eine schlimme Sache, Elend, Jammer AK. 1, 1, 2, 4. H. 1371. कृतं कष्टं व्याधेन — यस्तादृशं चारुर्वं क्रीडं कृत्यादकारणात् R. 1, 2, 32. कष्टं कष्टं भवता द्विगुणं रोपितश्चन्द्रः PĀNĀT. 163, 3. कष्टनापतितम् तान्यण्डानि मे नष्टानि HIT. 72, 15. कष्टं खल्वनयत्यता ÇĀK. 90, 20. BHARTṚ. 2, 88. कष्टं क्रूरा जिगीषवः KATHĀS. 4, 126. एकस्य कष्टस्य न यावद्वत्तं गच्छाम्यहम् — नावद्वितीयं समुपस्थितं मे PĀNĀT. II, 187. 141, 25. 193, 16. धिगर्थीः कष्टसंश्रयाः I, 179. कष्टपरंपरा 297. शीघ्रातपादिकाष्टानि सक्त्ये यानि सेवकः 302. अर्थार्थो याति कष्टानि II, 127. भारद्वाहकष्टभागिन् 68, 23. कष्टैश्चित P. 6, 2, 47, Sch. अंधकाष्ट grosser Elend BHĀG. P. 5, 12, 7. कष्टेन mit Mühe, mit Anstrengung: कष्टेनोपार्जितं मपि वित्तं हेलाया अपि गतम् PĀNĀT. 134, 13. एवं चित्तयतो मे मक्ता कष्टेन स द्रवसो व्यतिक्रातः 123, 22. ÇĀK. 43, 8. कष्टलभ्य (v. l. कष्टतरलभ्य) schwer zu erlangen HIT. 23, 18. कष्टागत mit genauer Noth angelangt VID. 306. — 3) कष्टम् interj. o Jammer! weh! कष्टं युद्धे दश शेषाः श्रुता मे त्रयो ऽस्माकं पाण्डवानां च सप्त MBu. 1, 215. कष्टं मो नाभिजानासि R. 3, 79, 46. Suçr. 1, 103, 17. MĀKĀ. 30, 6. 53, 5. HIT. 31, 21. PĀNĀT. 169, 2. धिक्काष्टम् III, 193. हा धिक्काष्टम् VIKR. 61, 7. — Vgl. सुकष्ट.

कष्टकारक (क + का) m. die Welt (Jammer verursachend) TRIK. 1, 134.

कष्टाय (von कष्ट), कष्टायते etwas Arges im Sinne haben P. 3, 1, 14 (= कष्टाय क्रमणे) und VĀRTT. (= कावचिकीर्षायाम्). = कष्टं कर्म करोति VOP. 21, 10.

कष्टि (von कष्ट) f. 1) test, trial. — 2) pain, trouble WILS.

कष्टिफल m. N. pr. eines Bhikshu LALIT. 3. कष्टिफल ed. Calc. 1, 17.

1. कस्, कसति gehen, sich bewegen NĀIGH. 2, 14. DHĀTUP. 20, 30. चकास NALOD. 2, 2 = शुभ्रमे (!) nach dem Schol. — intens. चनीकसीति, चनीकस्यते P. 7, 4, 84. VOP. 20, 7.

— उद् sich spalten, sich öffnen: उत्कसत् हृदयान्यूर्ध्वः प्राण उर्दीषतु AV. 14, 9, 21.

— निस् caus. hinaustreiben: क्षेत्रपाला एनं न निःकासयिष्यति PĀNĀT. 224, 5. ÇĀC. 9, 10 (निरकाशयत्). निःकासित AK. 3, 1, 39. H. 440. निजानगरात्रिकाशिता VET. 14, 20. 27, 13. 9, 4.

— प्र caus. 1) forttreiben, abweisen DHĀTUP. 93, 14 (im Prakṛt). — 2) zu Aufblühen bringen GHAT. 19.

— वि 1) sich spalten, partic. ved. विंक्तस्त P. 7, 2, 34. zerspalten, zerspringen: त्रिधा हृ श्यावमश्निना विकस्तमुज्जीवसं ऐरयत् RV. 1, 177, 24. उत्तानाया हृदये यद्विकस्तम् VS. 11, 39. zersprungen, von Gefässen KAUC. 136. विकस्तन् Suçr. 1, 247, 12. — 2) sich öffnen, aufblühen: विकसति हि पतंगस्योदये पुण्डरीकम् MĀLAT. 13, 3. विकसज्जाती (प्रावृष्) BHARTṚ. 1, 41. BHĀG. P. 3, 9, 21. विकसन्मुखपङ्कज 9, 10, 31. ÇĀC. 9, 47. श्राननैर्वचकसे (pass. impers.) 10, 36. विकसद्वक्त्रम् BHĀG. P. 7, 3, 21. ÇĀC. 9, 82. विकसन्नयन 71. Bildlich: विकसत्मुखश्री KUMĀRAS. 7, 55. निजहृदि विकसतः (auch विकसतः) froh, heiter seiend BHARTṚ. 2, 71. विकसित klass. P. 7, 2, 34, Sch. geöffnet, offen; vom Meere MBu. 1, 1234. aufgeblüht, blühend AK. 2, 4, 1, 8. H. 1128. MBu. 3, 11589. BHARTṚ. 1, 69. RT. 3, 17. DHĀTUP. 69, 7. SĀH. D. 62, 5. विकसितवदनकमला mit geöffnetem Lotusblunde PĀNĀT. 129, 10. विकसितनयनवदनकमल 192, 41. विकसितव-

दन BHĀG. P. 5, 9, 15. — caus. öffnen, zum Aufblühen bringen: स्वप्ने तो मया दृष्टं नभसश्चयुतमम्बुजम् । तच्च दिव्येन केनापि कुमारेण विकसितम् ॥ KATHĀS. 6, 138. चन्द्रो विकशयति कैरवचक्रवालम् BHARTṚ. 2, 65. कोपकुसुमं व्यचीकसत् ÇĀC. 13, 12. विकसित zum Aufblühen gebracht, aufgeblüht AMAR. 84. — Vgl. विकसुक, विकसिन्.

— अनुवि sich öffnen, aufblühen: श्रुतं तले ऽनुविकसन्मधुमाधवीनाम् BHĀG. P. 3, 13, 17.

— प्रवि sich öffnen: प्रविकसति — दशशतकर्मूर्त्तावतिणीव द्वितीये ÇĀC. 11, 63.

— सम् s. संकसुक.

2. कस्, कस्ते v. l. für कस्, कस्ते DHĀTUP. 24, 14.

1. कस् nom. ag. von 1. कस् P. 3, 1, 140.

2. कस 1, m. = कप Probierstein BHAR. zu AK. 2, 10, 32. ÇĀKDr. — 2) f. कसा = कशा Peitsche Sch. zu AK. 2, 10, 31.

कसना f. eine best. giftige Spinne Suçr. 2, 296, 13. 298, 10.

कसनोत्पादन m. N. einer Pflanze, Gendarussa vulgaris Nees (वासक). ÇĀBDAK. im ÇĀKDr. — Viell. fehlerhaft für कसना - (कासन das Husten + उत्पादन).

कसणोरि und कसणालि m. eine best. Schlange: पैदो कृति कसणालिम् AV. 10, 4, 5. Personifiziert: स दृष्टं कसणोरिः कादवेयो मन्त्रमण्युः VS. 1, 3, 4, 1.

कसाम्बु n. viell. Holzstoss: दृष्टं कसाम्बु चयनेन चितं तत्संज्ञात् अवं प्रश्यते AV. 18, 4, 37.

कसारस् ein best. Vogel: कसकाकायूराणां कृत्वासाकसारसाम् MBu. 13, 736.

कसिपु = कशिपु H. 683. ÇĀTĀDB. im ÇĀKDr.

कसेरु, कसेरुक und कसेरुमत् s. u. कशेरु, कशेरुक und कशेरुमत्. कस्तम्भी (1. क + स्तम्भ) f. Stütze an der Wagendeichsel ÇĀT. Br. 1, 1, 9.

कस्तोर n. καστόρεος, Zinn H. 1042. — Wir halten das so spät beglaubigte Wort gegen LIA. I, 239, N. 3 für entlehnt.

कस्तूरिका f. Moschus BHĀRIPR. im ÇĀKDr. कस्तूरिका TRIK. 3, 3, 288. RATNAM. im ÇĀKDr. PĀNĀT. 47, 8. KAURAP. S. KATHĀS. 4, 47. 22, 75. कस्तूरी AK. 2, 6, 3, 31. TRIK. 2, 6, 38. H. 644. 638. ÇĀNGĀRAT. 7. कपिला पिङ्गला कृष्णा कस्तूरी त्रिविधा क्रमात् । नेपाले ऽपि च काश्मीरे कामरूपे ऽपि ज्ञायते ॥ कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नेपालो मध्यमा भवेत् । काश्मीरदेशमेभवा कस्तूरी ह्यधना स्मृता ॥ RĀGĀN. im ÇĀKDr. LIA. 316, N. 2. कस्तूरिकाण्ड (क + ञ्ण + ञ) ist nach WILS. auch Moschus. कस्तूरिमृग Moschusthier MALL. zu KUMĀRAS. 1, 55. — Nach WILS. bezeichnet कस्तूरी auch noch zwei Pflanzen: Hibiscus Abelmoschus und Amaryllis zeylanica. Auch dieses Wort ist wohl aus dem Griechischen (κάστωρ) entlehnt.

कस्तूरिमलिका (क + म + ल) f. Moschusbeutel RĀGĀN. im ÇĀKDr.

कस्फिल m. N. pr. eines Bhikshu LALIT. Calc. 1, 17. — Vgl. कष्टिफल. कस्मल n. = कश्मल RĀJAN. zu AK. ÇĀKDr.

कस्मात् (abl. von 1. क) woher? warum? N. 3, 9. ARG. 9, 27. R. 1, 9, 26. 3, 44, 28. PĀNĀT. 1, 283. ÇĀK. 140. VID. 190. KĀC. zu P. 1, 2, 35. — Vgl. श्रवस्मात्.

कस्वर् adj. von 1. कस् P. 3, 2, 175. VOP. 26, 136.